Dr. Priti Ranjan
Assistant Professor
H.D Jain College (Ara)

B.A Part – I

Paper – 1 Topic- Uttar Vaidik arthik

प्रशासन

जब कर की प्रणाली नियमित हो गई तो प्रारंभिक प्रशासनिक व्यवस्था में परिवर्तन हो गया। अधिकारी की संख्या में वृद्धि हुई। शतपथ ब्राह्मण में रत्नियों की चर्चा है। रत्नियों की संख्या 12 थी -

(1) सेनानी 2) पुरोहित (3) युवराज (4) महिषि (पटरानी) 5) सूत (राजा का सारथी) 6) ग्रामिणी (गाँव का मुखिया) 7) प्रतिहारी (द्वारपाल) 8) संग्रहित्री (कोषाध्यक्ष) (9) भागदुघ (कर संग्रहकर्ता) 10) अक्षवाप (पासे में राजा का साथी) 11) पालागल (राजा का मित्र) (12) गोविकर्तन (शिकार में राजा का साथी)

पंचविंश ब्राह्मण में रत्नियों को वीर कहा गया है। इसके अतिरिक्त कर्मार (उद्योग का अधिकारी) रथपति (सुदूर क्षेत्र का प्रशासक) शतपति (सौ गाँवों का प्रशासक) उग्र (पुलिस) आदि अधिकारियों की चर्चा है।

किंतु इस काल राजा की शक्ति की सीमाएँ थी :-

1) राजा की शक्ति असीमित न थी क्योंकि उत्पादन प्रणाली विकसित न थी।
2) स्थायी सेना का अभाव था।
3) राजसूय यज्ञ में राजा सहयोगियों के घर जाकर उनका सहयोग प्राप्त करता था।
4) राजा की स्वेच्छाचारिता पर रीति और परंपरा का अंकुश भी था।

5) कुछ हद तक सभा और समिति भी राजा की शक्ति पर नियंत्रण करती थी। यद्यपि उत्तर वैदिक काल में इनकी स्थिति में कुछ गिरावट आयी थी। उत्तर वैदिक काल में समिति की तुलना में सभा अधिक महत्वपूर्ण हो गई। अथर्ववेद में एक जगह पर सभा के सदस्यों को 'नरिष्ठा' कहा जाता है। इसका आशय होता है — सामूहिक वाद - विवाद।

अर्थव्यवस्था

उत्तर वैदिक काल में कृषि आर्यों का मुख्य पेशा हो गयी। तैत्तरीय उपनिषद में अन्न को 'ब्रह्म' कहा गया। अथर्ववेद के अनुसार पृथुवैन्य (पृथ्वीवेन) ने हल और कृषि को जन्म दिया। जौ के अतिरिक्त अब चावल और गेहूँ मुख्य फसल हो गई है। यजुर्वेद में चावल के पाँच किस्मों की चर्चा है — महाव्रीही, कृष्णाव्रीही, शुक्लव्रीही, आशुधान्य एवं हायन अथर्ववेद में चावल की दो किस्में व्रीहि और तन्दुल की चर्चा है। अतरंजीखेड़ा और हस्तिनापुर से चावल के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यजुर्वेद में कुछ अन्य फसल माष (उड़द) यव (जौ) श्यामक (मोटे अनाज) गन्ना, तिल-सन की चर्चा है। वाजसनेयी संहिता में गेहूँ के लिए "गोधूम" शब्द है। सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण में कृषि की समस्त प्रक्रियाओं का वर्णन है। काठक संहिता में 24 बैलों द्वारा जुताई की चर्चा है।

राजा जनक द्वारा खेती तथा बलराम का हलधर कहलाना कृषि के महत्व को दर्शाता है। अथर्ववेद में सिंचाई का साधन "वँणाकूप" एवं "नहर" (कुल्या) का उल्लेख है। अतिवृष्टि और अनावृष्टि का उल्लेख है। छान्दोग्य उपनिषद में एक दुर्भिक्ष का उल्लेख है। ऐसा उल्लेख है कि भवना विश्वकर्मा ने एक ब्राह्मण को भूमिदान दिया था लेकिन भूमि उसके साथ जाने से इंकार कर गई।

पशुपालन

एक महत्वपूर्ण पेशा था किन्तु महत्व कम हुआ। अथर्ववेद में गाय, बैल और घोड़ा की प्राप्ति हेतु प्रार्थना की गई है। बड़े बैल 'महोक्ष' कहे जाते थे। उत्तर वैदिक काल में हाथी पालतू बने। हाथी की देखभाल संबंधी व्यवसाय 'हस्तिप' कहा जाता था। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार दो गदहे अश्विन देवताओं का रथ खींचते थे। शतपथ ब्राह्मण में शूकर (सुअर) तथा यजुर्वेद में कैवर्त (मछुआरे) की चर्चा है।

शिल्प

उत्पादन अधिशेष अधिक नहीं था। उन्नत अर्थव्यवस्था निर्मित नहीं था। कृषि कार्य में दास नहीं लगे थे। बल्कि सहयोगों द्वारा कृषि होती वाजसनेयी संहिता में कुछ शिल्प तथा धातुकर्मी, मछुआरे, धोबी, कुलाल, भीषक आदि पेशे प्रचलित हो गए। कर्पास (कपास) शब्द का उल्लेख नहीं है जबकि ऊर्ण शब्द कई बार आया है। कढ़ाई का काम करनेवाली स्त्रियों को पेशस्कारी कहा जाता था।

वाणिज्य और व्यापार

श्रेष्ठी गण, गणपति शब्द संभवतः अनुवैदिक-काल के व्यवसायिक संगठन थे। निष्क, शतमान, कृष्णल, रत्ती, पाद आदि सिक्कों का प्रचलन था। निष्क और शतमान - 320 रत्ती का था। कृष्णल 1 रत्ती या 1.8 ग्रेन होता था। महाजन को कुसीदीन कहा गया है।